

वरिष्ठ डॉक्टर्स की सलाह

बच्चों में बढ़ रही

स्टोन की समस्या

बीएचपी के डॉक्टर वरिष्ठ डॉ. एसएन संखवार ने बताया कि बच्चों में जंक फूड व फास्ट फूड का सेवन का चलन काफी बढ़ गया है।

डॉ. एसएन संखवार। शरीरिक गतिविधि कम है और खानापान सही नहीं होने की वजह से प्रोटीन व फास्ट फूड की कमी देखने का मिल रही है। शरीर में प्रोटीन व फास्ट फूड की कमी के कारण बच्चों में किडनी में स्टोन की समस्या देखने का मिल रही है। पांच वर्ष तक के बच्चों में स्टोन की समस्या देखी गई है। वहाँ, 18 वर्ष से अधिक उम्र के लोगों में भी पानी की कमी, खान-पान की बदलती आवृत्ति, ज्यादा नमक, बीनी, और प्रसंस्कृत खाना पार्श्व, मटोंगे में वृद्धि और गतिहीन जीवनशैली मुख्य वजह है।

50 फीसदी ठीक हो रहे कैंसर रोगी

डॉ. लारिट चुरुदी ने बताया कि कैंसर के प्रति लोगों के बीच

जागरूकता बढ़ी है। इस कारण अब कैंसर व्यायाम रेट यानी ठीक होने की दर हो गई है। जबकि पहले यह दर 20 से 25 फीसदी ही थी। इसकी मुख्य वजह है कि जागरूकता अभियान के जरिए बातों लक्षणों का भावकर या संवेदित कोई समस्या होने पर नई तकनीक की मशीनों के कारण जांच में पता लग जाता है। इस वजह से कैंसर को पहले यह दर से घटे रहते हैं। अब कई ब्रेस्ट कैंसर की सर्जी में ब्रेस्ट को काटना भी नहीं पड़ता है, बहुत ही गंभीर स्थिति में मरीज की जान बचाने के लिए काटना पड़ता है।

गाल ल्यूडर में पथरी से हो सकता कैंसर

डॉ. एस संखवार ने बताया कि गाल ल्यूडर में पथरी से कैंसर का खतरा बढ़ सकता है, जबकि लंबे समय तक पथरी रहने से

बांधनी सूजन

बाद में कैंसर का रूप ले सकती है। हालांकि, पिता की पथरी वाले अधिकांश लोगों को गाल ल्यूडर कैंसर नहीं होता है। वहाँ आकार की पथरी या फिर संयोगवश सर्जी के बाद इसका पापा चलना संभव है। कई मासों में गाल ल्यूडर कैंसर का पापा तब बढ़ता है, जब पथरी या अन्य समस्याओं के कारण पिता शय को निकालने की सर्जी (कोलेस्टरोटोमी) की जाती है।



जीएसवीएम मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य प्रो. संजय काला और वरिष्ठ विकित्सकों के साथ वार्ता करते बरेली इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी के कुलाधिपति डॉ. केशव अग्रवाल।



सर्जरी का प्रश्नावली लेते जीएसवीएम मेडिकल कॉलेज के डॉक्टर।

अमृत विचार

हरनिया में हो जाती है स्थितियां गंभीर

सम्मेलन में आए डॉ. राजीव खना ने बताया कि कई बार हरनिया में आंत के फैसले से आंत का वह हिस्सा बाहर निकल आता है, जो वापस नहीं डॉ. राजीव खना। जा पाता है।

यह जानलेवा हो सकता है और तुरंत आपातकालीन सर्जरी की आशयका होती है। इस स्थिति में गंभीर दर्द, मर्तों, उट्टी और गैस से मल त्याग करने में कठिनाई हो सकती है।



डॉ. केशव अग्रवाल को मिला लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड

बरेली इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी के कुलाधिपति हैं डॉ. केशव अग्रवाल, डॉक्टर्स ने ताजा की पुरानी यादें

यूपीएकॉन-2025

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

अमृत विचार। जीएसवीएम मेडिकल कॉलेज, कानपुर के सर्जरी विभाग द्वारा विद्युत स्थित थीम पार्क में आयोजित यूपीएकॉन-2025 के दूसरे दिन शनिवार।

डॉ. अ.सलम।

को सम्मेलन में देशभर से आए विशेषज्ञ शामिल हुए। इस अवसर पर बरेली इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी के कुलाधिपति डॉ. केशव अग्रवाल को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया। जीएसवीएम मेडिकल कॉलेज के सर्जरी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. जीडी यादव, डॉ. आर के मौर्य व डॉ. विकास कटियार ने उन्हें अवार्ड दिया।

गाल ल्यूडर में पथरी से हो सकता कैंसर

डॉ. एस संखवार ने बताया कि गाल ल्यूडर में पथरी से कैंसर का खतरा बढ़ सकता है, जबकि लंबे समय तक पथरी रहने से

बांधनी सूजन

बाद में कैंसर का रूप ले सकती है। हालांकि, पिता की पथरी वाले अधिकांश लोगों को गाल ल्यूडर कैंसर नहीं होता है। वहाँ आकार की पथरी या फिर संयोगवश सर्जी के बाद इसका पापा चलना संभव है। कई मासों में गाल ल्यूडर कैंसर का पापा तब बढ़ता है, जब पथरी या अन्य समस्याओं के कारण पिता शय को निकालने की सर्जी (कोलेस्टरोटोमी) की जाती है।

गाल ल्यूडर में पथरी होने से

बांधनी सूजन

बाद में कैंसर का रूप ले सकती है। हालांकि, पिता की पथरी वाले अधिकांश लोगों को गाल ल्यूडर कैंसर नहीं होता है। वहाँ आकार की पथरी या फिर संयोगवश सर्जी के बाद इसका पापा चलना संभव है। कई मासों में गाल ल्यूडर कैंसर का पापा तब बढ़ता है, जब पथरी या अन्य समस्याओं के कारण पिता शय को निकालने की सर्जी (कोलेस्टरोटोमी) की जाती है।

गाल ल्यूडर में पथरी होने से

बांधनी सूजन

बाद में कैंसर का रूप ले सकती है। हालांकि, पिता की पथरी वाले अधिकांश लोगों को गाल ल्यूडर कैंसर नहीं होता है। वहाँ आकार की पथरी या फिर संयोगवश सर्जी के बाद इसका पापा चलना संभव है। कई मासों में गाल ल्यूडर कैंसर का पापा तब बढ़ता है, जब पथरी या अन्य समस्याओं के कारण पिता शय को निकालने की सर्जी (कोलेस्टरोटोमी) की जाती है।

गाल ल्यूडर में पथरी होने से

बांधनी सूजन

बाद में कैंसर का रूप ले सकती है। हालांकि, पिता की पथरी वाले अधिकांश लोगों को गाल ल्यूडर कैंसर नहीं होता है। वहाँ आकार की पथरी या फिर संयोगवश सर्जी के बाद इसका पापा चलना संभव है। कई मासों में गाल ल्यूडर कैंसर का पापा तब बढ़ता है, जब पथरी या अन्य समस्याओं के कारण पिता शय को निकालने की सर्जी (कोलेस्टरोटोमी) की जाती है।

गाल ल्यूडर में पथरी होने से

बांधनी सूजन

बाद में कैंसर का रूप ले सकती है। हालांकि, पिता की पथरी वाले अधिकांश लोगों को गाल ल्यूडर कैंसर नहीं होता है। वहाँ आकार की पथरी या फिर संयोगवश सर्जी के बाद इसका पापा चलना संभव है। कई मासों में गाल ल्यूडर कैंसर का पापा तब बढ़ता है, जब पथरी या अन्य समस्याओं के कारण पिता शय को निकालने की सर्जी (कोलेस्टरोटोमी) की जाती है।

गाल ल्यूडर में पथरी होने से

बांधनी सूजन

बाद में कैंसर का रूप ले सकती है। हालांकि, पिता की पथरी वाले अधिकांश लोगों को गाल ल्यूडर कैंसर नहीं होता है। वहाँ आकार की पथरी या फिर संयोगवश सर्जी के बाद इसका पापा चलना संभव है। कई मासों में गाल ल्यूडर कैंसर का पापा तब बढ़ता है, जब पथरी या अन्य समस्याओं के कारण पिता शय को निकालने की सर्जी (कोलेस्टरोटोमी) की जाती है।

गाल ल्यूडर में पथरी होने से

बांधनी सूजन

बाद में कैंसर का रूप ले सकती है। हालांकि, पिता की पथरी वाले अधिकांश लोगों को गाल ल्यूडर कैंसर नहीं होता है। वहाँ आकार की पथरी या फिर संयोगवश सर्जी के बाद इसका पापा चलना संभव है। कई मासों में गाल ल्यूडर कैंसर का पापा तब बढ़ता है, जब पथरी या अन्य समस्याओं के कारण पिता शय को निकालने की सर्जी (कोलेस्टरोटोमी) की जाती है।

गाल ल्यूडर में पथरी होने से

बांधनी सूजन

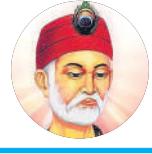
बाद में कैंसर का रूप ले सकती है। हालांकि, पिता की पथरी वाले अधिकांश लोगों को गाल ल्यूडर कैंसर नहीं होता है। वहाँ आकार की पथरी या फिर संयोगवश सर्जी के बाद इसका पापा चलना संभव है। कई मासों में गाल ल्यूडर कैंसर का पापा तब बढ़ता है, जब पथरी या अन्य समस्याओं के कारण पिता शय को निकालने की सर्जी (कोलेस्टरोटोमी) की जाती है।

गाल ल्यूडर में पथरी होने से

बांधनी सूजन

बाद में कैंसर का रूप ले सकती है। हालांकि, पिता की पथरी वाले अधिकांश लोगों को गाल ल्यूडर कैंसर नहीं होता है। वहाँ आकार की पथरी या फिर संयोगवश सर्जी के बाद इसका पापा चलना संभव है। कई मासों में गाल ल्यूडर कैंसर का पापा तब बढ़ता है, जब पथरी या अन्य समस्याओं के कारण पिता शय को निकालने की सर्जी (कोलेस्टरोटोमी) की जाती है।

गाल



मेरा मुख में कुछ नहीं, जो कुछ है सो तरा।
तेरा तुझकीं सौंपता, तरा
लगी है मेरा॥

कवीरदास जी कहते हैं, मेरे पास मेरा अपना कुछ भी नहीं है। मेरा यश, मेरी धन-संपत्ति सब कुछ तुहारा ही है। जब मेरा कुछ भी नहीं है, तो उसकी प्राप्ति कैसे? इसमें मेरा कुछ भी नुकसान नहीं है, वयोंकि मेरे तीरे दी हुई तीजे, तुझ ही समर्पित करता है।

वंदे मातरम् : राष्ट्रीय पुनर्जगित का बीज मंत्र

शब्दों के घटक अक्षर और अक्षर की घटक ध्वनि। ध्वनियों के कुशल संयोजक राग गहरे हैं। कोई शब्द अपनी अक्षर शक्ति से मंत्र बन जाते हैं। ऐसा अक्षर नहीं होता। ऐसा तभी होता है, जब दिक्काल शुभ मुहूर्त की रचना करे। ऐसी मुहूर्त में उत्पन्न होता है शक्तिशाली शब्द, जिसका पुरुशरण होता रहता है। वंदे मातरम् बैंकिंग चन्द्र के उत्पन्न 'अनंद मठ' का हिस्सा है। राष्ट्रीय अंदोलन में भारत के अवनि अंबर वंदे मातरम् के धोष से बहुत रहे हैं। वंदे मातरम् राष्ट्रीय पुनर्जगित का बीज मंत्र है। अभी तीन दिन पहले इसकी 100 वीं जयंती मनाई गई। उनिया की किसी भी देश में घर-घर पहुंचने वाली ऐसी काव्य रचना नहीं मिलती।

'वंदे मातरम्' मंत्र का अवतरण वैदिक ऋग्वेदों की ही तरह 7 नवंबर, 1875 को हुआ। अंग्रेजी राज के विशद्द देश की सांस्कृतिक राष्ट्र भावाभिव्यक्ति वंदे मातरम् में प्रकट हुई। 'वंदे मातरम्' 'अनंद मठ' (1882) में छापा। कांग्रेस 1885 में बनी। एक वर्ष बाद कलकत्ता में हुए अधिवेशन (1886) में हेमेन्द्र बाबू ने वंदे मातरम् गया। अव्यक्ष मौ. रहमत उल्लाह सयानी ने कोई प्रतिवाद नहीं किया। 1896 के कलकत्ता कांग्रेस अधिवेशन में रवीन्द्रनाथ टैटोर ने इसे देशराग एक ताल में गया। विट्टस्त सत्ता वंदे मातरम् से डर गई। सकाराने ने बांगल विभाजन की धोषणा की। विरोध शुरू हो गया। बंगाल धर्षक उठा। भारत के अवनि-अंबर में वंदे मातरम् था। 8 नवंबर, 1905 को वंदे मातरम् प्रतिवर्धित हो गया। विश्वविद्यालय चिंतक विल ड्यूरेन्ट ने बाद में कहा—'टट बाज 1905, देन दैट इंडियन रिवोल्यूशन बिगैन।' वाराणसी के कांग्रेस अधिवेशन (1905) में फिर से वंदे मातरम् गूंजा। पूर्वी बांगल में कांग्रेस ने शोभायात्रा (1906) निकाली। सेना ने लालीचाच किया। कांग्रेसी नेता अब्दुल रसूल सहित सबने वंदे मातरम् का जयकरा लगाया। कांग्रेस के राष्ट्रवादी नेता विपिन चन्द्र भाल के अखबार 'वंदे मातरम्' पर वंदे मातरम् की प्रांतियां लिखने पर यूकरा (26.8.1907) चाल। विपिन भाल ने 'वंदे मातरम्' के राष्ट्रवादी कानूनी कार्रवाई को राष्ट्रद्वेष कहा। अदालत के बार वंदे मातरम् का जययोग हुआ। अदालत के बार वंदे मातरम् का जययोग हुआ। भयंकर लालीचाच में दूर बैठा 15 वर्षीय शिशु सुशोल कुमार भी पीटा गया।

प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू ने संविधान सभा (25 अगस्त, 1948) में बताया, "संयुक्त राष्ट्र जनरल असेंबली (1947) में हमारे प्रतिनिधि से राष्ट्रगान की मांग की गई। हमारे पास राष्ट्रगान की कोई रिकार्डिंग नहीं थी, जिसे हम विदेश भेज सकते। प्रतिनिधि के पास 'जन गण मन' का रिकार्ड था। इसे बजाया गया तो अनेक देशों के प्रतिनिधियों को बहुत पसंद आया। तब से यही हमारी सेना, विदेशी दूतावासों आदि में जरूरी अवसरों पर बजाया जाता है।"

उसने प्रतिवाद किया। उसे 15 बेटों की सजा सुनाई गई। वंदे मातरम् का उत्तराप्ति कहा। 1905-06 वंदे मातरम् के उत्तराप्ति का कालखंड है। वंदे मातरम् देश के सभी क्षेत्रों में भारत भवित्व का स्वामिन बना।

भारत के अनेक भाषा भाषी कवियों ने 'वंदे मातरम्' अनुवाद किया। विश्वविद्यालय कवि सुभ्रत भारती ने तत्त्वात्मक राष्ट्र भावाभिव्यक्ति वंदे मातरम् में छापा।

प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू ने संविधान सभा (25 अगस्त, 1948) में बताया, "संयुक्त राष्ट्र जनरल असेंबली (1947) में हमारे प्रतिनिधि से राष्ट्रगान की मांग की गई। हम आपें तो 'पूरा' गाएं।" दिल्ली ने 'हां' किया।

आकाशवाणी से वंदे मातरम् का पूरा प्रसारण हुआ, लेकिन आजादी के 1 वर्ष बाद ही राष्ट्रगान 'जन गण मन' आ गया। क्यों आ गया?

प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू ने संविधान सभा (25 अगस्त, 1948) में बताया, "संयुक्त राष्ट्र जनरल असेंबली (1947) में हमारे प्रतिनिधि से राष्ट्रगान की मांग की गई। हम आपें तो 'पूरा' गाएं।" दिल्ली ने 'हां' किया।

आकाशवाणी से वंदे मातरम् का पूरा प्रसारण हुआ, लेकिन आजादी के 1 वर्ष बाद ही राष्ट्रगान 'जन गण मन' आ गया। क्यों आ गया?

प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू ने संविधान सभा (25 अगस्त, 1948) में बताया, "संयुक्त राष्ट्र जनरल असेंबली (1947) में हमारे प्रतिनिधि से राष्ट्रगान की मांग की गई। हम आपें तो 'पूरा' गाएं।" दिल्ली ने 'हां' किया।

प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू ने संविधान सभा (25 अगस्त, 1948) में बताया, "संयुक्त राष्ट्र जनरल असेंबली (1947) में हमारे प्रतिनिधि से राष्ट्रगान की मांग की गई। हम आपें तो 'पूरा' गाएं।" दिल्ली ने 'हां' किया।

प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू ने संविधान सभा (25 अगस्त, 1948) में बताया, "संयुक्त राष्ट्र जनरल असेंबली (1947) में हमारे प्रतिनिधि से राष्ट्रगान की मांग की गई। हम आपें तो 'पूरा' गाएं।" दिल्ली ने 'हां' किया।

प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू ने संविधान सभा (25 अगस्त, 1948) में बताया, "संयुक्त राष्ट्र जनरल असेंबली (1947) में हमारे प्रतिनिधि से राष्ट्रगान की मांग की गई। हम आपें तो 'पूरा' गाएं।" दिल्ली ने 'हां' किया।

प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू ने संविधान सभा (25 अगस्त, 1948) में बताया, "संयुक्त राष्ट्र जनरल असेंबली (1947) में हमारे प्रतिनिधि से राष्ट्रगान की मांग की गई। हम आपें तो 'पूरा' गाएं।" दिल्ली ने 'हां' किया।

प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू ने संविधान सभा (25 अगस्त, 1948) में बताया, "संयुक्त राष्ट्र जनरल असेंबली (1947) में हमारे प्रतिनिधि से राष्ट्रगान की मांग की गई। हम आपें तो 'पूरा' गाएं।" दिल्ली ने 'हां' किया।

प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू ने संविधान सभा (25 अगस्त, 1948) में बताया, "संयुक्त राष्ट्र जनरल असेंबली (1947) में हमारे प्रतिनिधि से राष्ट्रगान की मांग की गई। हम आपें तो 'पूरा' गाएं।" दिल्ली ने 'हां' किया।

प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू ने संविधान सभा (25 अगस्त, 1948) में बताया, "संयुक्त राष्ट्र जनरल असेंबली (1947) में हमारे प्रतिनिधि से राष्ट्रगान की मांग की गई। हम आपें तो 'पूरा' गाएं।" दिल्ली ने 'हां' किया।

प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू ने संविधान सभा (25 अगस्त, 1948) में बताया, "संयुक्त राष्ट्र जनरल असेंबली (1947) में हमारे प्रतिनिधि से राष्ट्रगान की मांग की गई। हम आपें तो 'पूरा' गाएं।" दिल्ली ने 'हां' किया।

प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू ने संविधान सभा (25 अगस्त, 1948) में बताया, "संयुक्त राष्ट्र जनरल असेंबली (1947) में हमारे प्रतिनिधि से राष्ट्रगान की मांग की गई। हम आपें तो 'पूरा' गाएं।" दिल्ली ने 'हां' किया।

प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू ने संविधान सभा (25 अगस्त, 1948) में बताया, "संयुक्त राष्ट्र जनरल असेंबली (1947) में हमारे प्रतिनिधि से राष्ट्रगान की मांग की गई। हम आपें तो 'पूरा' गाएं।" दिल्ली ने 'हां' किया।

प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू ने संविधान सभा (25 अगस्त, 1948) में बताया, "संयुक्त राष्ट्र जनरल असेंबली (1947) में हमारे प्रतिनिधि से राष्ट्रगान की मांग की गई। हम आपें तो 'पूरा' गाएं।" दिल्ली ने 'हां' किया।

प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू ने संविधान सभा (25 अगस्त, 1948) में बताया, "संयुक्त राष्ट्र जनरल असेंबली (1947) में हमारे प्रतिनिधि से राष्ट्रगान की मांग की गई। हम आपें तो 'पूरा' गाएं।" दिल्ली ने 'हां' किया।

प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू ने संविधान सभा (25 अगस्त, 1948) में बताया, "संयुक्त राष्ट्र जनरल असेंबली (1947) में हमारे प्रतिनिधि से राष्ट्रगान की मांग की गई। हम आपें तो 'पूरा' गाएं।" दिल्ली ने 'हां' किया।

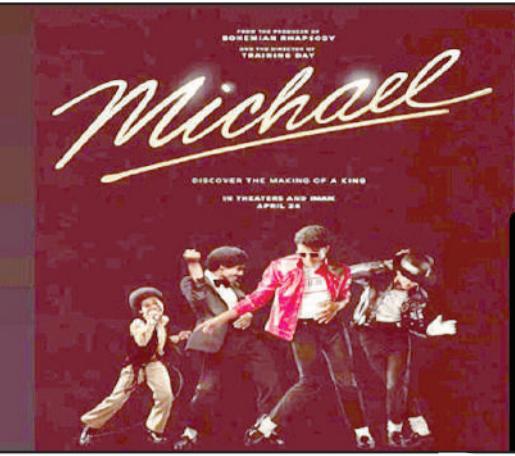
प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू ने संविधान सभा (25 अगस्त, 1948) में बताया, "संयुक्त राष्ट्र जनरल असेंबली (1947) में हमारे प्रतिनिधि से राष्ट्रगान की मांग की गई। हम आपें तो 'पूरा' गाएं।" दिल्ली ने 'हां' किया।

प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू ने संविधान सभा (25 अगस्त, 1948) में बताया, "संयुक्त राष्ट्र जनरल असेंबली (1947) में हमारे प्रतिनिधि से राष्ट्रगान की मांग की गई। हम आपें तो 'पूरा' गाएं।" दिल्ली ने 'हां' किया।

प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू ने संविधान सभा (25 अगस्त, 1948) में बताया, "संयुक्त राष्ट्र जनरल असेंबली (1947) में हमारे प्रतिनिधि से राष्ट्रगान की मांग की गई। हम आपें तो 'पूरा' गाएं।" दिल्ली ने 'हां' किया।

प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर ल

पॉप के बादशाह की बायोपिक 'माइकल' में नजर आएंगे



उनके भतीजे जैफर जैक्सन

माइकल जैक्सन को दुनिया भर में 'पॉप का बादशाह' कहा जाता है। उन्होंने संगीत, नृत्य और मनोरंजन की दुनिया में ऐसा क्रांतिकारी योगदान दिया, जिसे नई परिभाषा देने का श्रेय

भी उन्हीं को जाता है। उनके

आइकॉनिक एल्बम - 'थ्रिलर', 'बैड' और 'डेंजरस' ने पॉप संगीत के इतिहास की दिशा

बदल दी। उनकी विशिष्ट कलात्मकता, रिदमिक संगीत, नवोन्मेषी वीडियो और मूनवॉक

जैसा दिग्गज डांस मूव पॉप संस्कृति को नई ऊँचाई तक ले गए। इसी महान कलाकार की जिंदगी पर आधारित बायोपिक 'माइकल' का टीजर हाल ही में जारी किया गया है। 16 नवंबर

को जारी किए गए इस एक मिनट के टीजर में माइकल जैक्सन का किरदार उनके सगे भतीजे जैफर जैक्सन निभाते नजर आ रहे हैं। फिल्म में कॉलमैन डोमिंगो, निया लॉन्ग और माइल्स टेलर जैसे प्रसिद्ध कलाकार भी महत्वपूर्ण भूमिकाओं में दिखाई देंगे।

टीजर में माइकल की दुनिया की झलक

टीजर की शुरुआत स्टूडियो में जैफर जैक्सन द्वारा निभाए गए माइकल के किरदार से होती है, जहां वे हेडफोन लगाकर रिकॉर्डिंग की तैयारी करते दिखते हैं। इसके बाद स्टूडियो से सीधे दूश्य एक थरे हुए स्टेडियम पर कट होते हैं, जहां माइकल की लोकप्रियता की भव्य झलक दिखाई देती है। एक मिनट के टीजर में माइकल की दुनिया की झलक नजर आई। टीजर में माइकल के पेट के डिस्को बॉक्स-अप शॉट्स और एक बोर्ड पर चिपके नोट्स नजर आते हैं, जिन पर 'Beat It' और 'Billie Jean' लिखा है। गौरतलब है कि 1983 में रिलीज हुआ 'Beat It' माइकल जैक्सन की डिस्कोग्राफी में एक ऐतिहासिक पड़ाव माना जाता है। इसने उन्हें वैश्विक सितारा बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और 80 के दशक के संगीत का चेहरा बदल दिया। इसी दौरान टीजर में यह भी दिखाया गया है कि कैसे जैफर जैक्सन मच पर माइकल जैसी जादुई नृत्य ऊँचाई को साथ परकोर्न करते हैं और उनकी

आवाज भी एक पल को दर्शकों को प्रभित कर देती है कि यह माइकल ही है।

जैफर की अदाकारी देखकर फैस हैरान हैं और लगातार इसकी तरीफ कर रहे हैं। एक युंग ने कमेट किया - "इस ट्रेलर को ऑर्सन मिलना चाहिए।" दूसरे ने लिखा - "जैफर को माइकल का किरदार निभाते देख बहद खुशी हो रही है। इस फिल्म से बहुत उम्मीदें हैं।" तीसरे ने कहा - "उनकी आवाज बिल्कुल अपने चाचा जैसी है।"

अगले साल अप्रैल में रिलीज होगी फिल्म

यह फिल्म दुनिया के सबसे लोकप्रिय और रहस्यमय कलाकारों में से एक की जिंदगी के उन वहलूओं को सामने लाने का वादा करती है, जिन्हें कम लोगों ने जाना है। इस बातेंगी कि

माइकल जैक्सन कैसे एक अद्वितीय परफॉर्मर बने और उनकी प्रसिद्धि के पीछे कितनी महत्वता और संघर्ष छिपा था। फिल्म 24 अप्रैल 2026 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी।



ईरान की निःशरूपी आवाज एवं ट्रेस तारानेह अलीदूस्ती

तारानेह अलीदूस्ती एक ऐसा नाम है, जो ईरानी सिनेमा के साथ-साथ वहां के सामाजिक और राजनीतिक परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। 12 जनवरी 1984 को तेहरान में जन्मी जन्मी और सामाजिक कार्यकर्ता हैं, जिन्होंने अलीदूस्ती की शुरुआत और आँस्कर तक का सफर

अलीदूस्ती ने उन्हें कम उम्र में आधिनय की दुनिया में कदम रखा दिया था। 17 साल की उम्र में उनको पहली फिल्म 'आई एम टारानेह' (2002) रिलीज हुआ, जिसमें उनकी अधिनय को खुल साराहा गया और उन्होंने कई पुरस्कार जीते। इसके बाद उन्होंने पीछे चुपकर जाने ले देखा। उनको वहां सबसे बड़ी अंतर्राष्ट्रीय सफलता 2016 में आई 'द सेल्फी' में, जिसे असार फरहादी ने निर्देशित किया था। इस फिल्म में 89 वें अकादमी पुरस्कारों (ऑर्सर) में सर्वश्रेष्ठ विदेशी भाषा की फिल्म का पुरस्कार जीता। इस फिल्म के माध्यम से उन्हें वैश्विक पहचान मिली। हालांकि उन्होंने तकालीन अमेरिकी यात्रा प्रतिवेदी के विरोध में ऑर्सर समारोह का बहिष्कार किया था, जो उनके राजनीतिक रुख का पहला बड़ा सकेत था।

सामाजिक सक्रियता और जेल यात्रा

तारानेह अलीदूस्ती की प्रसिद्धि सिर्फ उनके अधिकारी तक ही सीमित नहीं है। वह ईरान में महिलाओं के अधिकारों और अधिकारियों की खतंत्रता की एक प्रतीक बन गई है। 2022 में हुए राष्ट्रव्यापी प्रदर्शनों के दौरान, वह प्रश्ननकारियों के समाधन में खुलकर सामने आई। दिसंबर 2022 में, उन्होंने सोशल मीडिया पर हिजाब के बिंदु अपनी एक तरही पोस्ट की, जिसमें उन्होंने प्रदर्शनकारियों के समाधन में एक फैन पकड़ा हुआ था।

इस साहसिक कदम के बाद, ईरानी अधिकारियों ने उन्हें 'झूते फैलाने' और 'देश विरोधी प्रवार' के आरोप में गिरफ्तार कर लिया। 18 दिनों तक जेल में रहने के बाद, उन्हें जनवरी 2023 में जमानत पर रिहा कर दिया गया। उनकी गिरफ्तारी ने दुनियाभर में मानवाधिकार संगठनों का ध्वन खींचा और उनकी रिहाई के लिए व्यापक अधिनयन चलाए गए।

मॉडल आण द वीक

नाम: चिंगी सिंह
ठाउन: कानपुर
एजुकेशन: स्नातक की पढ़ाई जारी
अचीवमेंट: शान-ए-कानपुर का खिताब
ड्रीम: प्रोफेशनल मॉडलिंग, एक्टर

वाहीदा रहमान भारतीय सिनेमा की महत्वपूर्ण अधिनेत्री हैं, जिन्हें उनकी सुन्दरता, गरिमा और अभिनय क्षमता के लिए जाना जाता है। वाहीदा रहमान का जन्म 3 फरवरी 1938 को तमिलनाडु के चेंगलपूर में एक तमिल मुरिलम परिवार में हुआ था। वह बधान से ही एक प्रीरिक्षित भरताराद्यम नर्तकी थीं। अपने परिवार की अर्थक मदद के लिए, उन्होंने डॉक्टर बनने का अपना सपना छोड़ और फिल्मों में प्रेषण किया। उन्होंने सबसे पहले तेतुगु और जिमिल फिल्मों में काम करना शुरू किया।

जिंदगी का सफर क्लासिक वहीदा



उनकी प्रारंभिक कालीनी में फिल्म निमित्त गुरु दत्त ने पहचाना, जिन्होंने उन्हें अपनी फिल्म 'सी. आई.डी.' (1956) से हिन्दी फिल्मों में लॉन्च किया। गुरु दत्त के साथ उनकी साझेदारी ने भारतीय सिनेमा को कई क्लासिक फिल्मों दी, जिनमें 'पासा' (1957), 'कागज के पूल' (1959) और 'साहिब खाली और गुलाम' (1962) शामिल हैं।

1960 के दशक के मध्य में वहीदा रहमान ने शीर्ष अधिनेत्री के रूप में अपनी जगह दबाई। उनकी सबसे यादगार भूमिकाओं में से एक 'गाड़ी' (1965) में 'रोजी' की थी, जिसने उन्हें व्यापक प्रशंसन और फलत फिल्मफेयर पुरस्कार दिलाया। इसके बाद, उन्होंने 'तीसरी कम्प' (1966), 'नील कम्प' (1968) और 'खाली ओं' (1969) जैसी कई सफल फिल्मों दी।

1974 में अधिनेत्री शशि रेखी (कमलजीत) से शादी करने के बाद, उन्होंने अधिनय से ब्रेक ले लिया और बंगलुरु चली गई। 2000 में अपने पति की मृत्यु के बाद, वह मुंबई लौट आई और सहयोगी भूमिकाओं में खींची की। उन्होंने 'वाटर' (2005), 'रंग दे बसंती' (2006) और 'दल्ली 6' (2009) जैसी फिल्मों में काम



वर्ल्ड ब्रीफ

चीनी एयरलाइन दिल्ली से शंघाई के लिए उड़ान शुरू करेगी

बींगिंग। चीनी एयरलाइन 'चाइन इंस्टर्न' रविवार से दिल्ली-शंघाई उड़ान शुरू करेगी। इससे कुछ दिन पहले, 'ईंडिगो' ने कोलकाता से यांगाइँ के लिए उड़ान शुरू की थी। दोनों देशों के बीच लगभग पांच साल के अंतराल के बाद उड़ान सेवाएं फिर से शुरू हो रही हैं। चाइनाइंस्टर्न की उड़ान दिल्ली से रात आठ बजे तक नामी होगी और सोमवार तक शंघाई पहुंचेगी। यह शंघाई से अप्राह्ल 12-30 बजे तक नामी होगी और शाम 4 छह बजे तक दिल्ली पहुंचेगी। यह शंघाई से एक दिन के अंतराल पर संचालित होगी। शंघाई में भारत का ग्राहणाण्य दूर प्रतीक यात्रा में जाएगी। उड़ान से बेहतर करनेवाली का पक्ष नामी युग्र होगा। और सोमवार बीती अंधार्या स्था रात्रि और शंघाई के नेतृत्व वाले पूर्वी चीन क्षेत्र के व्यापारिक एंक्रें द्वारा बीच लोगों के बीच मजबूत संबंधों को बढ़ावा मिलेगा।

रूसी संपत्तियों के उपयोग के लिए राजी नहीं हुआ बैल्यियम

मॉर्सक। यूरोपीय संघ आयोग जबकी गई

रूस संपत्तियों की उपयोग के लिए राजी करने के बैल्यियम की मानवानंद एंजेसी लेला की

रिपोर्ट के अनुसार बैल्यियम यूरोपीय

डिपोजिटरी में जगा रुसी संघु संपत्तियों

का उपयोग युक्त नक्षे की अत्यु और मध्यम

अवधि के लिए विवेचित करने के यूरोपीय

संघ आयोग के नियमित करने कर रहा है।

एंजेसी ने कहा है कि यूरोपीय संघ

आयोग के प्रतिनिधियों ने युक्तवार की

बैल्यियम के प्रतिनिधियों में युक्तवार की

प्रतिवेदन के लिए उड़ानों को दूर करने में

एक दिन के अंतराल पर संचालित होगी।

शंघाई में भारत का ग्राहणाण्य दूर

प्रतीक यात्रा में जाएगी। उड़ान से बेहतर करनेवाली का पक्ष नामी होगी। और सोमवार बीती अंधार्या स्था रात्रि और शंघाई के नेतृत्व वाले पूर्वी चीन क्षेत्र के व्यापारिक एंक्रें द्वारा बीच लोगों के बीच मजबूत संबंधों को बढ़ावा मिलेगा।

भारत ब्राजील के नेतृत्व वाले वन कोष में बतौर पर्यवेक्षक शामिल

नई दिल्ली, एंजेसी

भारत उष्णकटिबंधीय वनों के लिए ब्राजील के नए वैश्वक कोष में पर्यवेक्षक के रूप में शामिल हो गया है और उसने विकसित देशों से कार्बन उत्सर्जन की कटौती में तेजी लाने एवं जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए अपनी वित्तीय प्रतिबद्धताओं को पूरा करने का काम किया है।

ब्राजील के बलेम से आयोजित कांप-30 (कार्नेलिस अंक पार्टीज) के नेताओं के शिखर सम्मेलन में ब्राजील में भारतीय राजदूत दिनेश भाटिया ने शुक्रवार को भारत का वक्तव्य पेश करते हुए बहुपक्षवाद और परेस समझौते के प्रति देश की माध्यम से ब्राजील की प्रतिबद्धता की पुष्टि की। भाटिया ने ब्राजील के वैश्वक कोष में आयोजित करने का उपरांग फिर से शुरू हो गया। और सोमवार बीती अंधार्या स्था रात्रि और शंघाई से अप्राह्ल 12-30 बजे तक नामी होगी। यह शंघाई से एक दिन के अंतराल पर संचालित होगी। शंघाई में भारत का ग्राहणाण्य दूर प्रतीक यात्रा में जाएगी। उड़ान से बेहतर करनेवाली का पक्ष नामी होगा। और सोमवार बीती अंधार्या स्था रात्रि और शंघाई के नेतृत्व वाले पूर्वी चीन क्षेत्र के व्यापारिक एंक्रें द्वारा बीच लोगों के बीच मजबूत संबंधों को बढ़ावा मिलेगा।

विकसित देशों की बेपरवाही से बढ़ी

विकसित देशों से की अपनी वित्तीय प्रतिबद्धताएं पूरी करने की अपील

के संरक्षण के लिए सतत वैश्वक कार्बवाई की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम का प्रतिनिधित्व करने वाली 'ट्रायाकल फोरेस्ट्स' को एवं उसने विकसित देशों के साथ एक द्वारा तैयार किया गया नामों लेकिन इस समझौते पर भी पूरी तरह अमल नहीं हो पाया। दूसरी बार राष्ट्रपति बनने के बाद डोनाल्ड ट्रंप ने इस समझौते से अमेरिका के अलग होने की धृष्टियां पैदा कर दी हैं। अमेरिका के साथ धृष्टियां पैदा करने वाले एक अपार्टमेंट को कमात्मक नहीं किया है। अगले कुछ दिन बाद ब्राजील में होने जा रहे कांप-30 शिखर सम्मेलन में निपटे से जलवायु परिवर्तन के खतरों और उसने निपटने की रणनीति पर विचार किए जाने की उम्मीद है।

जलवायु परिवर्तन की चुनौती



जलवायु परिवर्तन के प्रमुख कारण

- जीवाश्म ईंधन का अतिथिक उपयोग ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को बढ़ावा देता है, जिससे वैश्वक तापमान वृद्धि की पूर्वसौधार्यिक समझौतों से डिग्गी सेलिस्ट्स से नीचे सीमित करना है, और 1.5 डिग्गी सेलिस्ट्स तक सीमित रखने के प्रयाप्ति है। यह समझौता 12 दिसंबर, 2015 को प्रांस के परिस में किया गया और 4 नवंबर 2016 को लागू हुआ था। यह सभी देशों का उत्पर्जन करने और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों पर खतरा बढ़ावा देता है।
- जीवाश्म ईंधन के अलावा वृद्धि की अपार्टमेंट को कमात्मक की अवश्यकता करने की ग्राहणी पैदा कर दी है। जीवाश्म ईंधन के निकाशण और उपयोग से भी ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन होता है। इससे वैश्वक तापमान बढ़ाता है।

इन देशों में स्पष्ट प्रभाव

ब्राजील समेत कुछ देशों में जलवायु परिवर्तन के स्पष्ट प्रभाव दिखने लगे हैं। यहां सूखे और बाढ़ जैसी चरम मौसम की घटनाओं में वृद्धि हुई है। अमेरिजन की वायु अवृत्ति और तीव्रता में वृद्धि हो गई है।

ब्राजील समेत कुछ देशों में जलवायु परिवर्तन के स्पष्ट प्रभाव दिखने लगे हैं। यहां सूखे और बाढ़ जैसी चरम मौसम की घटनाओं में वृद्धि हुई है।

विकसित देशों की भूमिका

- विकसित देश जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए वित्तीय और तकनीकी सहयोग देने के लिए प्रतिबद्ध हैं, लेकिन उनकी प्राप्ति धीमी और असमान है।
- कुछ ही विकसित देश हैं जो निम्न-वात्र विकास पथ पर आगे बढ़ रहे हैं। इससे बुरीतौं गंभीर होती जा रही है।
- जलवायु परिवर्तन के प्रभावों की प्रक्रिया में ऐतिहासिक रूप से ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन किया गया है, इसलिए उन पर दोहरी जिम्मेदारी है।

संभावित दुष्प्रणाम

- ग्रीनी की लहरी, बाढ़, सूखे और तूफानों जैसी चरम मौसम की घटनाओं की आवृत्ति और तीव्रता में वृद्धि हो गई है। कई देश दिवायसी नहीं दिखा रहे हैं।
- परिस्थिति देश को भारी नुकसान हो सकता है, जैव विविधता में कमी आपील के लिए एक प्रजातियां विलुप्त हो सकती हैं।
- बाढ़ और सूख से नुकसान हो सकता है, जैव विविधता के साथ वैश्वक श्वेतांशु में वृद्धि हो गई है।
- सूख-बाढ़ जैसी चरम मौसम की घटनाओं में वृद्धि हुई है।

ब्राजील समेत कुछ देशों में जलवायु परिवर्तन के स्पष्ट प्रभाव दिखने लगे हैं। यहां सूखे और बाढ़ जैसी चरम मौसम की घटनाओं में वृद्धि हुई है। अमेरिजन की वायु अवृत्ति और तीव्रता में वृद्धि हो गई है।

ब्राजील समेत कुछ देशों में जलवायु परिवर्तन के स्पष्ट प्रभाव दिखने लगे हैं। यहां सूखे और बाढ़ जैसी चरम मौसम की घटनाओं में वृद्धि हुई है।

ब्राजील समेत कुछ देशों में जलवायु परिवर्तन के स्पष्ट प्रभाव दिखने लगे हैं। यहां सूखे और बाढ़ जैसी चरम मौसम की घटनाओं में वृद्धि हुई है।

ब्राजील समेत कुछ देशों में जलवायु परिवर्तन के स्पष्ट प्रभाव दिखने लगे हैं। यहां सूखे और बाढ़ जैसी चरम मौसम की घटनाओं में वृद्धि हुई है।

ब्राजील समेत कुछ देशों में जलवायु परिवर्तन के स्पष्ट प्रभाव दिखने लगे हैं। यहां सूखे और बाढ़ जैसी चरम मौसम की घटनाओं में वृद्धि हुई है।

ब्राजील समेत कुछ देशों में जलवायु परिवर्तन के स्पष्ट प्रभाव दिखने लगे हैं। यहां सूखे और बाढ़ जैसी चरम मौसम की घटनाओं में वृद्धि हुई है।

ब्राजील समेत कुछ देशों में जलवायु परिवर्तन के स्पष्ट प्रभाव दिखने लगे हैं। यहां सूखे और बाढ़ जैसी चरम मौसम की घटनाओं में वृद्धि हुई है।

ब्राजील समेत कुछ देशों में जलवायु परिवर्तन के स्पष्ट प्रभाव दिखने लगे हैं। यहां सूखे और बाढ़ जैसी चरम मौसम की घटनाओं में वृद्धि हुई है।

ब्राजील समेत कुछ देशों में जलवायु परिवर्तन के स्पष्ट प्रभाव दिखने लगे हैं। यहां सूखे और बाढ़ जैसी चरम मौसम की घटनाओं में वृद्धि हुई है।

ब्राजील समेत कुछ देशों में जलवायु प

